Subject:- Sociology Date:- 08|05|2020
Class:- D-I (H) Paper:- 2nd
Topic:- कार्ल मार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त
By:- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga, 9507958619

Online study Material No:- (71)

कार्ल मार्क्स का वर्ग एवं वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त

Karl Marx के अनुसार मनुष्य साधारणत: एक सामाजिक प्राणी है, किन्तु अधिक स्पष्ट रूप से वह एक वर्ग प्राणी (Class Animal) है। मार्क्स का कहना है कि किसी भी युग में जीविका उपार्जन की प्राप्ति के विभिन्न साधनों के कारण मनुष्य पृथक-पृथक वर्गों में विभाजित हो जाता है और प्रत्येक वर्ग में एक विशेष वर्ग चेतना उत्पन्न हो जाती है। दूसरे शब्दों में इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि "वर्ग का जन्म उत्पादन के नवीन तरीकों से होता है वैसे ही नये वर्ग का उद्‌भव भी होता है।" इस प्रकार एक समय की उत्पादन प्रणाली ही उस समय के वर्गों की प्रकृति को निश्चित करती है।

आदिम समय में कोई भी वर्ग नहीं होता था और मनुष्य प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं को अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उपयोग करते थे। जीवित रहने के लिए आवश्यक वस्तुओं का वितरण बहुत कुछ समान ही था, पर शीघ्र ही वितरण में परिवर्तन होने लगा। मार्क्स के अनुसार समाज स्वयं ही अपने को वर्गों में विभाजित कर लेता है - यह विभाजन धनी-निर्धन, शोषक-शोषित और शासक वर्गों में होता है। आधुनिक समाज में आय के साधन के आधार पर तीन महान वर्गों का विभाजन किया जा सकता है। इसमें प्रथम वे हैं जो केवल श्रमशक्ति के अधिकारी हैं। दूसरे वर्ग में वे हैं जो पूँजी के अधिकारी और तीसरे में जमींदार हैं। इन तीनों वर्गों के आय के साधन क्रमशः मजदूरी, ब्याज और लगान हैं। मजदूरी कमाने वाले मजदूर, पूँजीपति और जमींदार उत्पादन के पूँजीवादी तरीकों पर आधारित आधुनिक समाज में तीन वर्ग हैं। Marx का कहना है कि इन तीनों वर्गों का जन्म पूँजीवादी उद्योग धंधों के पनपने के कारण हुआ। इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या को स्वीकार कर मार्क्स ने इतिहास को वर्ग संघर्ष के रूप में देखा है। इस सिद्धान्त को समाज के ऊपर लागू कर मार्क्स ने इन वर्गों को विभाजित किया है और इस तथ्य को स्थापित किया है कि इन वर्गों के मध्य सदैव संघर्ष विद्यमान रहता है। कम्यूनिस्ट घोषणा पत्र के अनुसार जितने समाजों का कभी अस्तित्व रहा है उन सबका इतिहास "वर्ग संघर्ष" का इतिहास है।

Scanned with CamScanner

स्वतंत्र और दास, कुलीन और अकुलीन, सामन्त और अर्धदास, मालिक और शिल्पी संघो के सदस्य, अत्याचारी और पीड़ित सदा से एक-दूसरे के विरोध में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह संघर्ष कभी तो अप्रकट रूप से चलता था और कभी-कभी संघर्ष के रूपमें सामने आता था। प्रत्येक बार यह संघर्ष तभी समाप्त हुआ है जब या तो समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ या वर्गो का लोप होगया। इस तरह से Marx ने इतिहास को संघर्ष माना है जिसका प्रधान कारण समाज की ऐसी उत्पादन व्यवस्था से है जो समाज को विभिन्न वर्गो में विभाजित करती है।

Types of Class (वर्ग के प्रकार)

Marx ने अपने विवेचन में दो प्रकार के वर्गो की चर्चा किया है:-
1. उत्पादनकर्ता और 2. उत्पादन पर अधिकार।
उत्पादन करने वाले वर्ग को सर्वहारा या मेहनतकश वर्ग तथा दूसरा वर्ग जो सर्वहारा की मेहनत से पलता है - बुर्जुआ वर्ग।

मोटे रूप से प्रत्येक युग में समाज में दो वर्ग रहते हैं। एक वर्ग वह है जिसके पास उत्पादन के साधन हैं। दूसरा वर्ग वह है जिसके पास उत्पादन के कोई साधन नही है केवल श्रम है। इन दोनो वर्गो के हित एक-दूसरे से भिन्न है। फलस्वरूप दोनो वर्गो के मध्य निरंतर संघर्ष पाया जाता है। वर्गो का यह संघर्ष मार्क्स ने उत्पादन की उच्चतर अवस्था तक पहुँचने में मदद करता है। इसलिए जब कभी भी क्रांति सफल होती है तो उत्पादन की उच्च व्यवस्था स्थापित होती है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार क्रामवेल की 1689 की महान क्रांति ब्रिटेन में पूँजीवाद के विकास का प्रधान कारण है। यही काम फ्रांस में 1789 की क्रांति ने किया था।

वर्ग संघर्ष का विश्लेषण

Marx ने अपने समय की ऐसी सभी घटनाओं का अध्ययन किया और सामाजिक विकास को समझने के लिए वर्ग शक्तियों का विश्लेषण करना आवश्यक समझा। मार्क्स ने यूरोप के अनेक देशों में घटने वाली समस्याओं का अध्ययन किया। विशेषकर 1848 की क्रांतिकारी घटनाओं से कुछ निष्कर्ष निकले और ऐसे नियमों का प्रतिपादन किया जो सभी क्रांतियों में समान रूप से लागू किए जा सकते हैं। ये निष्कर्ष निम्न प्रकार है:-

1. नयी व्यवस्था के अधिकार पाने के इच्छुक वर्ग द्वारा क्रांति का संचालन होता है:- मार्क्स ने सर्वप्रथम यह बताया कि क्रांतिकारी संघर्ष को

Scanned with CamScanner

सदैव वह वर्ग संचालित करता है जो नयी व्यवस्था में अधिकार और शक्ति प्राप्त करने का इच्छुक होता है। किन्तु इन क्रांतियों में केवल एक ही वर्ग कार्य नहीं करता, समाज के अन्य उत्पीड़ित वर्ग भी सहयोग करते हैं। क्रांतियों के ऐसे युग में मार्क्स का कथन है कि जैसे एक व्यक्ति का अंदाज हम उसके कथन पर नहीं लगा सकते, उसी तरह ऐसे क्रांतिकारी युग का मूल्यांकन उसकी चेतना के आधार पर नहीं किया जा सकता है।

2. **वर्ग संघर्ष का उद्देश्य समाजवाद स्थापित करना है :-** मजदूरों द्वारा ऐसी क्रांतियों को संगठित करने का उद्देश्य मार्क्स के अनुसार पूँजीवादी शासन को उलटकर समाजवाद की स्थापना होता है। इस प्रकार का क्रांति की तैयारी करने के लिए जब कहीं से मजदूर संगठनों को सहायता दी जाती है तो उनकी शक्ति बढ़ती है और क्रांति का अनुभव होने लगता है। उत्पादन की व्यवस्था को बदलने के बाद ही यह संघर्ष समाप्त होता है।

3. **वर्ग संघर्ष आर्थिक विकास के स्तर पर विद्यमान रहता है :-** मार्क्स के अनुसार वर्ग संघर्ष आर्थिक विकास के स्तर पर विद्यमान रहता है। औद्योगिक पूँजीवाद के प्रारंभिक युग में यह संघर्ष असंगठित रूप में होता है। परन्तु उद्योग-धंधो के विकास के साथ मजदूरों की संख्या भी उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है एवं संख्या की वृद्धि के साथ-साथ मजदूर वर्ग की संगठनात्मक शक्तियों का भी विकास होता है तथा मजदूरों की यूनियन की स्थापना होती है। इस प्रकार राष्ट्रीय पैमाने पर संगठनों का जन्म होता है।

4. **समस्त उत्पीड़ित वर्ग क्रांति में भाग लेते हैं :-** यूरोप की क्रांतियों का विश्लेषण कर मार्क्स इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ये क्रांतियाँ किसी एक वर्ग द्वारा नहीं की गयी थी बल्कि समस्त उत्पीड़ित वर्गों ने इसमें भाग लिया था। उगते हुये पूँजीपति वर्ग ने इसका नेतृत्व किया था। संघर्ष के समय पर मजदूर वर्ग ने एक निश्चित सीमा तक विकास कर लिया था और अन्य वर्गों के साथ उनकी मैत्री हुयी थी। 1891 में मार्क्स ने यह बात सिद्ध कर दिया कि जब पेरिस में मजदूर वर्ग ने कम्यून स्थापित करके क्रांति का नेतृत्व किया परन्तु इस क्रांति में केवल मजदूर वर्ग ने भाग नहीं लिया वरन् छोटे-छोटे दुकानदार और जर्मनी की विजय से क्षुब्ध लोग भी थे।

5. **क्रांति किसी विशेष वर्ग की न होकर सभी शोषित वर्गों की होती है :-** इन सभी व्याख्याओं के अध्ययन से मार्क्स निष्कर्ष पर पहुँचे कि प्रत्येक क्रांति जो शासक वर्ग का तख्ता चढ़ने का निर्णय लेती है वह केवल

Scanned with CamScanner

(४) वर्ग विशेष की क्रांति नही जो शासन पर अपना अधिकार चाहती है, वरन् उन समस्त वर्ग की क्रांति है जो मौजूदा शासक वर्ग द्वारा शोषित होते हैं।

6. वर्ग संघर्ष परस्पर आर्थिक हितों के कारण चलता है:- मार्क्स के अनुसार क्रांति के पश्चात् दूसरे वर्ग के हाथ में शक्ति का स्थानांतरण होता है। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन की नयी व्यवस्था स्थापित होती है। इस प्रकार मार्क्स इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि उत्पादन से सम्बन्धित परस्पर विरोधी हितो के कारण ही वर्ग संघर्ष होता है। मार्क्स के अनुसार - उत्पादन की व्यवस्था के उपर आधिपत्य रखने वाला वर्ग अपने हितो की रक्षा के लिए सदैव सरकारी मशीन का उपयोग करता है। मौजूदा व्यवस्था में बदलाव चाहने वाले वर्ग को दबाने में सदा से सरकारी मशीन का प्रयोग किया गया है, इसलिए मार्क्स की दृष्टि में मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिए शक्ति का उपयोग अनिवार्य है।

सर्वहारा का अधिनायकत्व :- कम्युनिष्ट घोषणा पत्र के अनुसार "इतिहास में इससे पहले जितने आन्दोलन हुये, सभी अल्पसंख्यकों के आन्दोलन थे। मजदूर आन्दोलन, विशाल बहुसंख्यक वर्ग का बहुसंख्यकों के हित में चलने वाला स्वतंत्र और सचेतन आन्दोलन है।" मार्क्स के अनुसार इस प्रकार के आन्दोलन के सफलता के बाद ही सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना होती है, किन्तु इन सफलताओं का तात्पर्य वर्ग संघर्ष का समाप्त होना नही है। इसके विपरित मार्क्स ने इस प्रकार की क्रांतियाँ व्यापक परिवर्तन की सूचना मात्र होती है। इसके पश्चात् सरकारी मशीनरी मजदूरों के पक्ष में हो जाती है।

मार्क्स के अनुसार यह वर्ग संघर्ष समाज के विभिन्न वर्गों में विभाजित होने का परिणाम है। वर्गों के हित परस्पर एक-दूसरे से टकराते हैं इसलिए जब तक समाज वर्गों में बँटा रहेगा तब तक समाज में वर्गसंघर्ष होता रहेगा।

मार्क्स का मत है कि वर्ग संघर्ष में क्रांति आदि शब्दों से आम जनता को भयभीत नही होना चाहिए। भयभीत तो उन पूँजीपतियों को होना चाहिए जो कि हरदम मेहनतकश जनता का खून - चूसकर फल-फूल रहे हैं। डर तो उन्हे होना चाहिए जिनकी समस्त शक्ति और शोषण करने का अधिकार क्रांति के फलस्वरूप सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित होने पर धूल में मिल जाएगा।

S.N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U

Scanned with CamScanner